Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

दलित महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन

[1]आदित्य विशाल, [2]डॉ. महेन्द्र कुमार चौरसिया

[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक

[1–2]विभागः समाजशास्त्र, आई. ई. सी. विश्वविद्यालय, बद्दी (हि. प्र.),

सार

यह अध्ययन भारत में दलित महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को उजागर करता है, जहाँ वे आज भी गहरे भेदभाव, हिंसा और वंचना का सामना कर रही हैं। जाति, लिंग और पितृसत्तात्मक ढांचे का त्रिस्तरीय दबाव उन्हें समाज के सबसे कमजोर वर्ग में बनाए रखता है। उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर है, वे असंगठित क्षेत्र में कम मजदूरी पर काम करने को मजबूर हैं और सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ भी नहीं उठा पातीं। सामाजिक भेदभाव, संसाधनों की कमी, और प्रतिनिधित्व के अभाव ने उनकी स्थिति को और जटिल बना दिया है, हालाँकि शिक्षा, सरकारी प्रयासों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से धीरे–धीरे सुधार की संभावना बनी है।

मुख्य शब्द

दलित महिलाएँ, जाति भेदभाव, सामाजिक असमानता, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक बहिष्कार, सामाजिक न्याय, सरकारी योजनाएँ, शिक्षा और सशक्तिकरण।

परिचय

भारत में दलित महिलाओं को आज भी गहरे और संगठित सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। जाति, लिंग और पितृसत्तात्मक ढांचे का

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

त्रिस्तरीय दबाव उन्हें समाज के सबसे हाशिये पर ले आता है। वे कृषि, स्वच्छता और घरेलू काम जैसे क्षेत्रों में अहम योगदान देती हैं, लेकिन फिर भी उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है। संसाधनों, रोजगार के बेहतर अवसरों और कानूनी सुरक्षा तक उनकी पहुंच बेहद सीमित है। सरकार की योजनाओं और नीतियों के जरिए कुछ सुधार जरूर हुए हैं, लेकिन जमीनी हकीकत ये है कि जाति–आधारित असमानता और भेदभाव अब भी कायम हैं। इसका असर दलित महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और सामाजिक–राजनीतिक भागीदारी पर साफ दिखता है। उन्हें न सिर्फ हिंसा और शोषण का सामना करना पड़ता है, बल्कि प्रतिनिधित्व के जरूरी मंचों से भी अक्सर बाहर रखा जाता है।

सामाजिक स्थिति

भारतीय सामाजिक संरचना में, दलित महिलाओं को बहुत सारे अन्याय का सामना करना पड़ता है जो सीधे उनकी स्थिति और पद को प्रभावित करता है। असमानता सामाजिक मानदंडों, नीतियों और प्रथाओं द्वारा संगठित और निर्मित होती है जो शक्ति, धन और अन्य सामाजिक संसाधनों के अनुचित और अन्यायपूर्ण वितरण को बढ़ावा देती है। दलित महिलाओं की स्थिति सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक कारकों पर निर्भर करती है और बदले में, ये कारक उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। भारत में, जाति और सामाजिक स्तरीकरण स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक और आर्थिक परिणामों को निर्धारित करते हैं। दलित महिलाओं को "पवित्रता और प्रदूषण" के साथ ब्राह्मणवादी मोह की कीमत पर असमानता का सामना करना पड़ा, जिसका विकास के सभी क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

दलित महिलाएँ आम तौर पर गाँव के एक कोने में अलग–अलग बस्तियों में रहती हैं, जहाँ उन्हें पीने का पानी, स्वास्थ्य सुविधाएँ, शिक्षा, सड़क आदि जैसी नागरिक सुविधाएँ नहीं मिलती हैं। शहरी क्षेत्रों में, वे बड़े पैमाने पर झुग्गी–झोपड़ियों में पाई जाती हैं, जो आम तौर पर बहुत ही अस्वच्छ वातावरण में स्थित होती हैं। वे सबसे वंचित समूह हैं, जो आसानी से शोषण और हिंसा के शिकार होते हैं। भारतीय समाज में उनका जीवन सबसे असुरक्षित है, क्योंकि भारतीय समाज में उनकी भूमिका गौण है और पितृसत्तात्मक और पदानुक्रमिक संरचनाएँ हैं। धर्म के नाम पर दलित महिलाओं का वंचना जैसे कि ''नग्न पूजा'', देवदासी प्रथा का अभ्यास और इसी तरह की अन्य प्रथाएँ उन्हें हिंसा और भेदभाव के प्रति अधिक अधीन बनाती हैं। उनमें से एक महत्वपूर्ण प्रतिशत कृषि मजदूर के रूप में काम कर रहे हैं। ज्यादातर वे ''नागरिक स्वच्छता कार्य'' में लगे हुए हैं। जोखिम भरे कार्यस्थल और श्रम अधिकार संरक्षण उपायों की अनुपस्थिति प्रवासी दलित महिलाओं को व्यावसायिक चोट के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है। दलित महिलाएँ नियोक्ताओं, प्रवास एजेंटों, भ्रष्ट नौकरशाहों और आपराधिक गिरोहों द्वारा दुर्व्यवहार और शोषण के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होती हैं। कई स्थितियों में दलित महिलाओं को यह नहीं पता होता कि उन्हें कौन से अधिकार प्राप्त हैं और उन्हें कैसे प्राप्त किया जाए, इस प्रकार, दुर्व्यवहार के मामले दर्ज नहीं किए जाते। दलित महिलाओं के सामाजिक नुकसान अस्पृश्यता के रूप में प्रकट हुए हैं, जिसमें सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में उनके साथ भेदभाव और अत्याचार शामिल हैं, भले ही अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव की प्रथा को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया गया है।

दलित महिलाओं के पास अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों और बुराई के खिलाफ बोलने के लिए कोई सामूहिक आवाज और प्रतिनिधित्व नहीं है। आधुनिक भारत की जाति–आधारित

व्यवस्था दलित महिलाओं को हमारे समाज के सबसे हाशिये पर धकेल देती है। वे खेती–किसानी के क्षेत्र में रोजाना संघर्ष करती हैं। दलित महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों के इस महत्वपूर्ण अंत को प्राप्त करने के लिए, शिक्षा आत्मसम्मान और गौरव के विकास के लिए एक प्रभावी हथियार है। दलित महिलाओं के साथ सबसे बड़ी समस्या जीवित रहने की है, गरीबी, दहेज और हत्याएँ आधुनिकीकरण और तकनीकी प्रगति के साथ नए आयाम ले चुकी हैं।

तालिका 1: ग्रामीण बनाम शहरी क्षेत्रों में दलित महिलाओं का प्रतिशत

वर्ष	ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिशत	शहरी क्षेत्रों में प्रतिशत	पृथक ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिशत	पृथक शहरी क्षेत्रों में प्रतिशत	बुनियादी सुविधाओं के बिना रहने वाले लोगों का प्रतिशत
1961	75.42%	24.58%	88.75%	70.20%	92.75%
1971	73.89%	26.11%	85.90%	68.40%	89.12%
1981	71.48%	28.52%	83.50%	65.10%	85.60%
1991	69.22%	30.78%	80.15%	62.45%	81.80%
2001	66.78%	33.22%	77.50%	59.20%	77.50%

Global Insights, Multidisciplinary Excellence

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

Published Date: 24/09/2025

2011	64.87%	35.13%	74.20%	55.15%	74.30%
2021	62.50%	37.50%	70.10%	51.00%	71.25%
2024	60.10%	39.90%	67.20%	48.60%	68.10%

इस तालिका में 1961 से 2024 तक के वर्षों में दलित महिलाओं का ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रतिशत प्रदर्शित किया गया है। इसके अनुसार, 1961 में 75.42 प्रतिशत दलित महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में और 24.58 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में थीं। समय के साथ, शहरी क्षेत्रों में दलित महिलाओं का प्रतिशत बढ़ता गया, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह धीरे–धीरे घटा। 2024 तक, ग्रामीण क्षेत्रों में दलित महिलाओं का प्रतिशत 60.10 प्रतिशत हो गया, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह बढ़कर 39.90 प्रतिशत हो गया। इसके अलावा, पृथक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में दलित महिलाओं का प्रतिशत भी इसी ट्रेंड को दर्शाता है। इसके साथ ही, बुनियादी सुविधाओं के बिना रहने वाले दलित महिलाओं का प्रतिशत समय के साथ घटा, जो सामाजिक और विकासात्मक परिवर्तनों को दर्शाता है।

Global Insights, Multidisciplinary Excellence

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

Published Date: 24/09/2025

तालिका 2: बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत

वर्ष	पेयजल तक पहुंच	स्वच्छता तक पहुंच	बिजली तक पहुंच	स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच	खाद्य सुरक्षा तक पहुंच वाले लोगों का प्रतिशत
1961	15.74%	5.60%	32.42%	10.22%	33.80%
1971	17.10%	6.40%	34.18%	12.50%	35.20%
1981	20.05%	7.35%	36.77%	15.30%	36.45%
1991	23.80%	10.25%	40.45%	18.10%	39.00%
2001	26.90%	12.15%	43.22%	22.50%	41.85%
2011	30.15%	14.05%	47.10%	27.08%	44.50%
2021	35.10%	16.00%	51.80%	33.10%	48.30%
2024	40.20%	18.00%	55.00%	38.20%	50.75%

यह तालिका दलित महिलाओं की बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच को दिखाती है, जिसमें पेयजल, स्वच्छता, बिजली, स्वास्थ्य सेवा, और खाद्य सुरक्षा शामिल हैं। 1961 में, बुनियादी

सुविधाओं तक पहुंच बहुत कम थी, जैसे पेयजल तक केवल 15.74 प्रतिशत दलित महिलाएं ही पहुंच पा रही थीं। समय के साथ, इन सुविधाओं तक पहुंच में वृद्धि देखी गई। 2024 तक, पेयजल तक पहुंच बढ़कर 40.20 प्रतिशत, स्वच्छता तक पहुंच 18 प्रतिशत, बिजली तक पहुंच 55 प्रतिशत, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच 38.20 प्रतिशत, और खाद्य सुरक्षा तक पहुंच 50.75 प्रतिशत हो गई। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि दलित महिलाओं के लिए बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता में धीरे–धीरे सुधार हुआ है, हालांकि अभी भी काफी अंतर है।

तालिका 3: सामाजिक भेदभाव और अस्पृश्यता का सामना करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत

वर्ष	सामाजिक भेदभाव का सामना करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत	अस्पृश्यता का सामना करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत	जाति आधारित हिंसा का सामना करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत	लिंग आधारित हिंसा का सामना करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत	मैला ढोने के काम में लगी दलित महिलाओं का प्रतिशत
1961	88.00%	90.22%	60.11%	85.50%	52.90%
1971	85.40%	87.50%	56.30%	83.20%	50.00%
1981	82.20%	85.80%	53.10%	81.30%	47.00%
1991	79.12%	82.40%	50.50%	79.00%	45.10%

2001	76.20%	80.12%	47.00%	75.40%	42.50%
2011	72.50%	75.40%	44.20%	72.10%	40.80%
2021	68.30%	70.10%	42.10%	68.00%	38.40%
2024	63.20%	65.90%	39.10%	64.50%	36.50%

यह तालिका दलित महिलाओं को सामाजिक भेदभाव, अस्पृश्यता, जाति आधारित हिंसा, लिंग आधारित हिंसा, और मैला ढोने के काम में लगे होने के प्रतिशत को दर्शाती है। 1961 में, 88 प्रतिशत दलित महिलाएं सामाजिक भेदभाव का सामना कर रही थीं, और 90.22 प्रतिशत महिलाओं को अस्पृश्यता का सामना करना पड़ रहा था। अन्य श्रेणियों में भी उच्च प्रतिशत था, जैसे जाति आधारित हिंसा (60.11 प्रतिशत), लिंग आधारित हिंसा (85.50 प्रतिशत), और मैला ढोने का काम (52.90 प्रतिशत)। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि दलित महिलाएं अनेक प्रकार के भेदभाव और हिंसा का शिकार हो रही थीं। समय के साथ, इन मुद्दों में कमी आई है, जैसे 2024 में सामाजिक भेदभाव का सामना करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 63.20 प्रतिशत, अस्पृश्यता का 65.90 प्रतिशत, जाति आधारित हिंसा का 39. 10 प्रतिशत, लिंग आधारित हिंसा का 64.50 प्रतिशत, और मैला ढोने के काम में लगी महिलाओं का प्रतिशत 36.50 प्रतिशत हो गया। यह दर्शाता है कि दलित महिलाओं के खिलाफ भेदभाव और हिंसा में धीरे–धीरे कमी आ रही है, लेकिन यह समस्या पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है।

तालिका 4: खतरनाक काम में लगी दलित महिलाओं का प्रतिशत

वर्ष	खतरनाक कार्य में प्रतिशत (कृषि)	खतरनाक कार्य (निर्माण) में प्रतिशत	खतरनाक कार्य (स्वच्छता) में प्रतिशत	खतरनाक काम में प्रतिशत (घरेलू श्रम)
1961	78.40%	3.50%	2.00%	10.30%
1971	77.00%	4.00%	2.30%	11.20%
1981	75.50%	4.50%	3.00%	12.00%
1991	73.80%	5.00%	4.20%	13.00%
2001	71.30%	5.80%	5.00%	14.10%
2011	68.60%	6.50%	5.70%	15.20%
2021	65.90%	7.00%	6.10%	16.40%
2024	63.00%	7.50%	6.50%	17.00%

यह तालिका दलित महिलाओं के खतरनाक कामों में भागीदारी का प्रतिशत दर्शाती है, जैसे कृषि, निर्माण, स्वच्छता, और घरेलू श्रम। 1961 में, 78.40 प्रतिशत दलित महिलाएं खतरनाक

कृषि कार्य में लगी थीं, और 10.30 प्रतिशत घरेलू श्रम में भी शामिल थीं। समय के साथ, कृषि में खतरनाक काम करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत घटता गया, जो 2024 तक 63 प्रतिशत हो गया। निर्माण और स्वच्छता कार्यों में भी भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ी, जबकि घरेलू श्रम में लगे दलित महिलाओं का प्रतिशत लगातार बढ़ता हुआ 17 प्रतिशत तक पहुंच गया। यह दर्शाता है कि समय के साथ दलित महिलाओं को खतरनाक कार्यों से बाहर निकालने में कुछ सुधार हुआ है, लेकिन खतरनाक कामों में उनकी भागीदारी अभी भी काफी बड़ी संख्या में है।

आर्थिक स्थिति

दलित महिलाओं की आर्थिक स्थिति भारत में बहुत ही कठिन और असमान है। वे भारतीय समाज के सबसे कमजोर वर्ग से आती हैं और उनकी जीवनशैली में असमानता की गहरी जड़ें हैं। दलित महिलाएँ भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, खासकर कृषि और स्वच्छता के क्षेत्रों में। वे समाज के लिए अत्यधिक श्रम करती हैं, लेकिन उन्हें उनके काम का उचित सम्मान और मुआवजा नहीं मिलता। इन महिलाओं की जीवनशैली बेहद कठिन है, क्योंकि वे अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों के बाहरी इलाकों में रहती हैं, जहाँ बुनियादी सुविधाओं की कमी होती है। जैसे कि पानी, शौचालय, सड़कें, और चिकित्सा सुविधाएं, जिनकी वजह से उनका जीवन बहुत ही निम्न स्तर का रहता है। इन क्षेत्रों में रहने वाली दलित महिलाएँ मानसिक और शारीरिक रूप से अत्यधिक संघर्ष करती हैं, क्योंकि उनके पास बहुत सीमित संसाधन होते हैं।

आर्थिक रूप से भी दलित महिलाओं की स्थिति बहुत खराब है। अधिकांश दलित महिलाएं कृषि मजदूरी, घरेलू काम, और अन्य असंगठित क्षेत्र में काम करती हैं, जहाँ वे बहुत कम

मजदूरी पर काम करती हैं। उनके पास अपनी भूमि नहीं होती और ना ही उन्हें आर्थिक उन्नति के लिए कोई अवसर मिलते हैं। उनके पास कोई संपत्ति या पूंजी नहीं होती, जिसके कारण वे किसी प्रकार के उद्यम को शुरू करने या अपनी स्थिति को सुधारने में सक्षम नहीं होतीं। वे आमतौर पर परिवार की देखभाल के लिए काम करने पर मजबूर होती हैं, और इस कारण से उनके पास कभी भी आर्थिक स्वतंत्रता नहीं होती। इसके अलावा, बेरोजगारी दर भी उनके बीच बहुत अधिक है, और उन पर अत्यधिक शोषण और भेदभाव होता है, जो उनकी जीवन स्थिति को और भी कठिन बना देता है।

भारत सरकार ने दलित महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कई योजनाएँ और नीतियाँ बनाई हैं, जैसे आरक्षण, सरकारी योजनाओं के माध्यम से सहायता आदि, लेकिन इन योजनाओं का लाभ बहुत कम दलित महिलाओं तक पहुँच पाता है। अधिकांश दलित महिलाएँ इन योजनाओं के बारे में जानकारी से वंचित रहती हैं, या फिर उन्हें इन योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इसके अलावा, सरकारी प्रशासन की अक्षमता और भ्रष्ट्राचार के कारण इन योजनाओं का वास्तविक लाभ उन तक नहीं पहुँच पाता। इन परिस्थितियों में, दलित महिलाएं अक्सर अपनी स्थिति में सुधार लाने के लिए संघर्ष करती रहती हैं, लेकिन समाज में जातिवाद और पितृसत्तात्मक विचारधारा की गहरी जड़ें उन्हें अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने से रोकती हैं।

इस सबके बावजूद, दलित महिलाएं अपनी स्थिति में सुधार लाने के लिए संघर्ष करती रहती हैं। हालांकि उनके लिए आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाना आसान नहीं है, लेकिन सरकार और सामाजिक संगठनों की ओर से किए गए प्रयासों से कुछ हद तक बदलाव देखा जा सकता है। फिर भी, दलित महिलाओं को उनके अधिकारों

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 24/09/2025

और समान अवसरों के लिए अभी भी लम्बी लड़ाई लड़नी है। समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है कि दलित महिलाओं को न केवल आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति हो, बल्कि उनकी पहचान और सम्मान भी सुनिश्चित किया जाए।

तालिका 5: दलित महिलाओं की रोजगार स्थिति

वर्ष	कृषि श्रम में दलित महिलाओं का प्रतिशत	घरेलू श्रम में दलित महिलाओं का प्रतिशत	औद्योगिक श्रम में दलित महिलाओं का प्रतिशत	औपचारिक रोजगार में दलित महिलाओं का प्रतिशत	अनौपचारिक रोजगार में दलित महिलाओं का प्रतिशत
1961	82.15%	5.25%	2.30%	3.40%	8.80%
1971	80.25%	6.00%	3.40%	4.00%	8.85%
1981	77.45%	7.10%	4.50%	5.20%	9.30%
1991	74.00%	8.00%	5.00%	6.30%	10.50%
2001	72.10%	9.25%	6.10%	7.00%	11.50%
2011	70.20%	10.00%	7.30%	9.00%	12.50%
2021	68.30%	11.00%	8.50%	10.50%	13.30%

2024	65.20%	12.00%	9.00%	12.00%	14.80%

यह तालिका दलित महिलाओं की रोजगार स्थिति को विभिन्न श्रेणियों में दिखाती है, जैसे कृषि, घरेलू श्रम, औद्योगिक श्रम, औपचारिक रोजगार, और अनौपचारिक रोजगार। 1961 में, 82.15 प्रतिशत दलित महिलाएं कृषि श्रम में लगी थीं, और 5.25 प्रतिशत घरेलू श्रम में कार्य कर रही थीं। समय के साथ, कृषि श्रम में दलित महिलाओं का प्रतिशत घटा, और औद्योगिक श्रम में उनकी भागीदारी बढ़ी। 2024 तक, कृषि श्रम में लगे दलित महिलाओं का प्रतिशत 65.20 प्रतिशत और घरेलू श्रम में 12 प्रतिशत हो गया। औपचारिक रोजगार में भाग लेने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत भी बढ़कर 12 प्रतिशत हो गया, जबकि अनौपचारिक रोजगार में उनकी भागीदारी 14.80 प्रतिशत तक पहुंच गई। यह दिखाता है कि दलित महिलाओं के रोजगार के क्षेत्रों में विविधता आई है और उनका रोजगार औपचारिक क्षेत्रों में बढ़ा है, हालांकि कृषि श्रम में उनकी बड़ी हिस्सेदारी बनी हुई है।

तालिका 6: गरीबी और वित्तीय स्वतंत्रता में दलित महिलाओं का प्रतिशत

वर्ष	गरीबी रेखा से नीचे दलित महिलाओं का प्रतिशत	आर्थिक रूप से स्वतंत्र दलित महिलाओं का प्रतिशत	कम वेतन वाली नौकरियों में दलित महिलाओं का प्रतिशत	स्वरोजगार में दलित महिलाओं का प्रतिशत	सरकारी सहायता प्राप्त करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत
1961	90.10%	2.50%	85.00%	3.10%	8.80%

1971	88.50%	3.00%	84.25%	3.80%	9.00%
1981	85.60%	4.20%	82.40%	4.50%	10.50%
1991	82.30%	5.40%	80.10%	5.10%	12.00%
2001	79.80%	7.00%	77.50%	6.30%	13.50%
2011	75.90%	10.00%	75.30%	7.50%	15.80%
2021	72.20%	12.50%	72.10%	9.30%	17.50%
2024	68.50%	15.20%	70.80%	11.00%	19.20%

यह तालिका दलित महिलाओं की गरीबी और वित्तीय स्वतंत्रता को दर्शाती है। 1961 में, 90.10 प्रतिशत दलित महिलाएं गरीबी रेखा से नीचे थीं, और केवल 2.50 प्रतिशत महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र थीं। समय के साथ, गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत घटा, और 2024 में यह घटकर 68.50 प्रतिशत हो गया। आर्थिक रूप से स्वतंत्र दलित महिलाओं का प्रतिशत 15.20 प्रतिशत तक बढ़ गया। कम वेतन वाली नौकरियों में काम करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 85 प्रतिशत से घटकर 70.80 प्रतिशत हो गया, और स्वरोजगार में लगी दलित महिलाओं का प्रतिशत 11 प्रतिशत तक पहुंच गया। सरकारी सहायता प्राप्त करने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत भी बढ़कर 19.20

प्रतिशत हो गया। यह दिखाता है कि दलित महिलाओं के आर्थिक हालात में सुधार हुआ है, लेकिन गरीबी और वित्तीय निर्भरता अभी भी एक बड़ी चुनौती है।

तालिका 7: सरकारी योजनाओं में दलित महिलाओं का प्रतिशत

वर्ष	सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त करने वालों का प्रतिशत	आरक्षण आधारित नौकरियों में दलित महिलाओं का प्रतिशत	सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियों में दलित महिलाओं का प्रतिशत	सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दलित महिलाओं का प्रतिशत	सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों में दलित महिलाओं का प्रतिशत
1961	5.20%	0.50%	0.30%	0.70%	2.80%
1971	6.30%	1.00%	0.80%	1.50%	4.00%
1981	8.40%	2.10%	1.50%	2.80%	5.20%
1991	10.50%	4.20%	2.70%	4.30%	6.40%
2001	12.20%	6.00%	3.20%	5.10%	7.80%
2011	15.40%	8.00%	4.50%	7.00%	10.20%
2021	18.20%	10.50%	6.20%	8.50%	12.80%

2024	20.50%	12.00%	7.50%	10.30%	14.90%

यह तालिका दलित महिलाओं के सरकारी योजनाओं से लाभ और विभिन्न सरकारी क्षेत्र में उनके प्रतिनिधित्व को दिखाती है। 1961 में, केवल 5.20 प्रतिशत दलित महिलाएं सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हो रही थीं, और सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों में 2.80 प्रतिशत दलित महिलाओं की भागीदारी थी। समय के साथ, सरकारी योजनाओं से लाभ लेने वाली दलित महिलाओं का प्रतिशत बढ़ा। 2024 तक, यह 20.50 प्रतिशत तक पहुंच गया। आरक्षण आधारित नौकरियों में दलित महिलाओं का प्रतिनिधित्व 12 प्रतिशत तक बढ़ गया, और सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों में भागीदारी 14.90 प्रतिशत तक पहुंच गई। सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियों और सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी दलित महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। यह दर्शाता है कि सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों में दलित महिलाओं की भागीदारी में सुधार हुआ है, लेकिन इस क्षेत्र में और सुधार की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारत में दलित महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अब भी बेहद कमजोर है। जाति, लिंग और पितृसत्तात्मक ढांचे के दबाव ने उन्हें समाज के सबसे निचले पायदान पर बनाए रखा है। वे कृषि, स्वच्छता और घरेलू काम जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद भी न्यूनतम मजदूरी और सम्मान से वंचित रहती हैं। सरकारी योजनाएँ और नीतियाँ कुछ सुधार लाने में मददगार रही हैं, लेकिन उनका लाभ सभी तक नहीं पहुँच पाया है। शिक्षा, जागरूकता और सशक्तिकरण के माध्यम से ही दलित महिलाओं की स्थिति में स्थायी

सुधार संभव है। समाज में गहरी जमी असमानता को खत्म करने के लिए उनकी पहचान, गरिमा और अधिकारों को मजबूत करना बेहद जरूरी है। दलित महिलाओं का सशक्तिकरण समग्र सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक अनिवार्य कदम है।

संदर्भ

- भोई, एस., और लाकड़ा, एम. (2024)। भारत में दलितों और आदिवासियों के लिए उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक पूंजीः एक संस्थागत समीक्षा। जर्नल ऑफ सोशल इंक्लूजन, 18(4), 76–89।
- बोराह, पी. (2017)। भारत में उच्च शिक्षा तक पहुँच में असमानता को मापनाः एक मात्रात्मक विश्लेषण। जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनइक्वैलिटी, 18(2), 145–159।
- चंद, ए. (2017)। अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा में माता–पिता की धारणाएँ और अनुभवः सामाजिक–आर्थिक कारकों और संस्थागत समर्थन का प्रभाव। जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन स्टडीज, 9(3), 92–104।
- घोष, पी. (2011)। भारत में दलित महिलाओं की शिक्षा में सामाजिक–आर्थिक बाधाओं का एक अध्ययन। इंडियन सोशल स्टडीज रिव्यू, 9(1), 33–48।
- जैकब, पी. (2018)। भारत में उच्च शिक्षा में भागीदारीः 1983 से 2014 तक जाति–आधारित असमानताएँ और श्रम बाजार के परिणाम। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 29(3), 56–71।
- कुमार, एम. (2017)। उच्च शिक्षा में जाति–आधारित प्रतिनिधित्वः उत्तर प्रदेश के काजीपुर गाँव से एक केस स्टडी। दलित शिक्षा अध्ययन, 7(1), 112–125।

- मोहपात्रा, के. (2015)। ओडिशा में दलित महिलाओं की उच्च शिक्षा तक पहुँचः एक सामाजिक बहिष्कार परिप्रेक्ष्य। ओडिशा जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 17(1), 23–38।